स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

विक्रम साराभाई

चित्रः के. परशुराम

विक्रम साराभाई का जन्म 12 अगस्त 1919 को अहमदाबाद में हुआ था। साराभाई परिवार स्वतंत्रता संग्राम में करीब से जुड़ा हुआ था जिसके चलते इनके यहां महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरु, रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे लोगों का आना-जाना होता था। इन सबका असर विक्रम साराभाई के व्यक्तित्व पर भी हुआ। गुजरात कॉलेज, अहमदाबाद से इंटरमीडिएट पास कर विक्रम साराभाई ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के सेंट जॉन्स कालेज में दाखिला लिया। विश्व युद्ध की वजह से वे 1940 में भारत लौटे और इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स में पढ़ाई करते रहे। सितम्बर 1942 में आपका विवाह प्रसिद्ध नृत्यांगना मृणालिनी से हुआ। 1945 में एक बार फिर कैम्ब्रिज गए और कॉस्मिक किरणों पर किए गए काम के लिए 1947 में पीएचडी से नवाजा गया।

भारत लौटकर नवम्बर 1947 में उन्होंने अहमदाबाद में अपने पारिवारिक ट्रस्ट से फिज़िकल रिसर्च लैबोरेटरी की स्थापना की। विक्रम साराभाई ने ही भारत सरकार को अंतरिक्ष कार्यक्रम की ज़रूरत के प्रति आश्वस्त किया और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (ISRO) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

थुम्बा में देश के प्रथम राकेट लांचिंग स्टेशन की स्थापना के प्रवर्तक साराभाई के प्रयासों के फलस्वरूप 1977 में भारत के प्रथम उपग्रह आर्यभट का प्रक्षेपण संभव हुआ। उनके ही प्रयासों का परिणाम था कि 1975-76 में सेटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविज़न एक्सपेरीमेंट शुरू हुआ यद्यपि तब तक डॉ. साराभाई की मृत्यु हो चुकी थी।

साराभाई की विज्ञान शिक्षण में विशेष रुचि थी। उन्होंने 1966 में अहमदाबाद में कम्युनिटी साइंस सेंटर की शुरुआत की जिसे अब विक्रम साराभाई कम्युनिटी साइंस सेंटर के नाम से जाना जाता है। साराभाई एक अनूठे इदारासाज़ थे। उनके प्रयासों से ही देश में आईआईएम, फिजिकल रिसर्च लैबोरेटरी, अहमदाबाद टेक्सटाइल्स इण्डस्ट्रियल रिसर्च एसोसिएशन, सेंटर फॉर एन्वायर्मेंटल प्लानिंग एण्ड टेक्नालॉजी और ब्लाइंड मेन्स एसोसिएशन जैसे संस्थानों की स्थापना हो सकी। अपने कार्यों के लिये साराभाई को शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार के अलावा पद्म भूषण एवं पद्म विभूषण से नवाजा गया।

30 दिसम्बर 1971 को 52 वर्ष की आयु में विक्रम साराभाई का निधन हो गया।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी